रामायण में दर्शाये पात्र का हमारे जीवन से सम्बन्ध

जानें....

जिस दिन मोह खत्म... उस दिन रावण खत्म...

राजयोगिनी ब्र.कु. उषा बहन,
वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षिका

- गतांक से आगे...

पिछले अंक में आपने पढ़ा कि कैसे हनुमान को उनकी शक्तियों की स्मृति दिलाई, जो विस्मृत हो चुकी थीं। जब स्मृति आई तब जाकर उनके अन्दर श्री राम की मदद करने की हिम्मत आई। तो समुद्र लांघने का काम कर देता है। फिर जैसे ही समुद्र लांघने जाता है तो फिर एक माया खड़ी हो जाती है। ब्राह्मण जीवन में फिर एक माया आती है। कौन-सी? महावीर के सामने भी माया आती है कौन-सी? 'सुरसा और सिंहिका' समुद्र से निकल आई। और कहा कि हमें ब्रह्माजी का वरदान है, और तुम्हें हमारे मुख से गुज़रना होगा, तो उस समय हनुमान ने क्या किया, अपना रूप बहुत सूक्ष्म कर दिया। यानी बाबा जो कहते हैं 'बालक सो मालिक'। कभी 'मालिक' बन जाओ, कभी 'बालक'। बालक बनकर छोटा हो जाओ, आज्ञाकारी बन चलो। महावीर का ये लक्षण 'बैलेन्स' बहुत अच्छा है।

तब कब निकल कर आ गया पता ही नहीं चला, और उस माया के ऊपर भी विजय प्राप्त कर ली। लेकिन लंका पहुँचा तो वहाँ लंकिनी थी। वहाँ छोटा रूप लेकर जा रहा था तो कहा कि अरे तू कहाँ जा रहा है? तो वहाँ उसने बड़ा रूप कर दिया, और इतना बड़ा कर दिया जो उस लंकिनी को समाप्त। तो कहाँ बड़ा बनना है और कहाँ छोटा बनना है? ये बैलेन्स भी जीवन के अन्दर बहुत ज़रूरी है। और जैसे ही ये बैलेन्स रखा तब जाकर रावण के दरबार में पहुंच गया और पहुँचने के बाद रावण ने उसका अपमान किया, उसको आसन नहीं दिया, तो उसने अपना आसन इतना ऊँचा कर दिया, रावण से भी ऊँचा। यानी लोग आपका अपमान करेंगे, ब्राह्मण जीवन में रावण अपमान करवाता रहेगा आपका लेकिन ऐसे समय पर अपने स्वमान में स्थित हो जाओ। और अपने स्वमान को इतना ऊँचा कर दो, ये बहुत ज़रूरी है। लेकिन स्वमान के साथ-साथ दूसरी दो चीज़ें ज़रूरी हैं – जो अंगद आता है और अंगद माना दृढ़ संकल्पधारी और दूसरा निश्चय बुद्धि। पैर रख दिया और रावण को कहा हिलाकर दिखा! अगर मेरा पैर हिल गया तो माता सीता तेरी। निश्चबुद्धि, हिलेगा नहीं राम मेरे साथ है। सारे बन्दर परेशान हो गये हैं, ये क्या कह दिया अंगद ने? अगर हिला दिया तो? रावण हँसने लगा कि मैं तो क्या मेरे महारथी ही तेरे पैर को हिला देंगे। हिलाने की कोशिश की हिला नहीं, तब रावण स्वयं आता है हिलाने के लिए, पैर कौन-सा? बुद्धि रूपी पैर को हिलाने का प्रयत्न रावण करता है। 'निश्चयबुद्धि' जो आत्मा है उनकी बुद्धि को हिलाने का प्रयत्न रावण ज़रूर करेगा, वो रावण है, माया नहीं है। रावण जब पैर हिलाने का प्रयत्न करने गया तो जैसे ही वो आया, उसको लात मार दी और कहा कि पैर पकड़ना है तो श्री राम के पकड़, मेरे नहीं।

रावण कोई असुर नहीं था- ब्राह्मण था, याद रखना। लेकिन जिन ब्राह्मणों में अहंकार आ जाता है अपनी विशेषताओं को लेकर, वही रावण है।

तो इसीलिए जीवन में महावीर बनकर आगे चलने के लिये, अनुमान-अभिमान का हनन, दूसरा दृढ़ता की शक्ति और निश्चयबुद्धि बनना आवश्यक है। तभी हर प्रकार के रावण की परीक्षाओं से पार हो सकेंगे और ऐसे निश्चयबुद्धि के बन्दरों ने कहा कि अरे हिला देता तो क्या करता, रावण के महारथी ही। तो कहा पैर रखना मेरा काम, हिलाना और न हिलाना उसका काम। 'निश्चयबुद्धि' कि मैंने पैर भी अगर उसके भरोसे रखा है तो एक बल एक भरोसा। उसके भरोसे रखा है तो रावण की भी ताकत नहीं है। रावण तो क्या, बाबा कई बार कहते हैं मुरली में कि रावण का बाप भी आ जाये तो भी हिला न सकें। रावण का बाप कौन है? रावण का बाप कौन है? शिवबाबा। शिवबाबा है। शिवबाबा भी अगर हिलाने का प्रयत्न करें तो भी हिलने वाले नहीं, ऐसे 'निश्चयबुद्धि'। क्योंकि रावण कोई असुर नहीं था- ब्राह्मण था, याद रखना। लेकिन जिन ब्राह्मणों में अहंकार आ जाता है अपनी विशेषताओं को लेकर, वही रावण है। रावण भी किसकी पूजा करता था? शिवबाबा की। तो वो आत्मायें, हैं अहंकारी लेकिन याद तो शिवबाबा को करती हैं ना? जैसे कहा कि रावण तो क्या रावण का बाप भी आ जाये तो हिला नहीं सकता, इतना निश्चयबुद्धि। तभी रावण को खत्म करने की शक्ति हमारे में आ जायेगी। तो पूरी रामायण ब्राह्मण जीवन है।

फिर रावण को मारना है, तो रावण को मारने की युक्ति क्या है? नाभि में मारो, नहीं तो सिर काटता था दूसरा निकल आता था, इसीलिए विभीषण ने कहा कि नाभि में मारो। तो नाभि कौन-सी है रावण की? रावण की नाभि है 'मोह'। स्वयं से जब मोह है तो अहंकारी हो गया। दूसरों से जब मोह है तो आसक्ति, प्रलोभन के वश है। इसीलिए सभी विकारों की जड़ मोह, तभी गीता के अन्दर भी भगवान ने अर्जुन को कहा कि नष्टोमोहा स्मृतिर्लब्धा। नाभि से ही पोषण मिलता रहता है, आप अभिमान को काटो नहीं, मोह को काटो। मोह जिस दिन खत्म हुआ, रावण मर गया। इसीलिए रावण की नाभि में मारना माना नष्टोमोहा स्मृतिर्लब्धा।

यही अठारह अध्याय गीता का सार और यही रामायण का भी सार, नष्टोमोहा बनो। हम ब्राह्मणों के अन्दर अभी भी थोड़ा-थोड़ा अंश रावण का है, इसलिए उसको समाप्त करना ज़रूरी है।

पानीपत-हरियाणा। प्रभु समर्पण समारोह का दीप प्रज्वलित कर शुभारंभ करते हुए राजयोगिनी ब्र.कु. सुदेश दीदी,निर्देशिका,ब्रह्माकुमारीज़ यूरोप, राजयोगिनी ब्र.कु. सरला दीदी, राजयोगी ब्र.कु. भारत भूषण भाई, समर्पित होने वाली ब्र.कु. मोनिका बहन व ब्र.कु. दीपा बहन तथा अन्य।

फतेहाबाद-हरियाणा। ब्रह्माकुमारीज़ के नवनिर्मित ओम शांति म्यूज़ियम का उद्घाटन करते हुए संस्थान की अति. मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी ब्र.कु. जयंती दीदी। साथ हैं ब्र.कु. हंसा बहन, ब्र.कु. मोहिनी बहन, पूर्व विधायक बलवान दोलतपुरिया, ब्र.कु. मदन भाई, ब्र.कु. दीपक भाई,माउण्ट आबू तथा अन्य।

डाकपत्थर-उत्तराखंड। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा नशा मुक्त भारत अभियान के कार्यक्रम के दौरान विकास निकेतन हाई स्कूल के डायरेक्टर बी.एस. नौटियाल, वाइस प्रिंसपल शैलेष नौटियाल व अन्य स्टाफ को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् समूह चित्र में सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. सविता बहन, ब्र.कु. पारुल बहन तथा अन्य।

सोनबरसा-सीतामढ़ी(बिहार)। नवरात्रि के अवसर पर आयोजित चैतन्य देवियों की झाँकी का दीप प्रज्वलित कर शुभारंभ करते हुए ब्र.कु. बहनें एवं भाई।

चरखी दादरी-हरियाणा। हरियाणा सरकार द्वारा आयोजित नशा मुक्त हरियाणा अभियान के अंतर्गत साइक्लोथॉन यात्रा का ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान से ब्र.कु. प्रेमलता बहन द्वारा मेजबान चौक पर स्वागत किया गया। इस दौरान बड़ी संख्या में ब्र.कु. भाई-बहनों ने साइकिल यात्रा का फूल वर्षा कर स्वागत किया। इसके साथ ही यात्रा में शामिल महिला साइकिल यात्री को पुष्प गुच्छ देकर सम्मानित किया।

For Online Transfer

Name: OM SHANTI MEDIA OF RERF
Pay Directly to: osmorerf@indianbk

BANK NAME:- INDIAN BANK
BRANCH:- Shantivan, Talhati
ACCOUNT :- OM SHANTI MEDIA OF RERF
ACCOUNT NO:- 7552337300,
IFSC - CODE:- IDIB000S319
Note:- AfterTransfer send detail on
E-Mail - omshantimedia.acct@bkivv.org
E-Mail - omshantimedia@bkivv.org

ओमशान्ति मीडिया सदस्यता हेतु सम्पर्क करें
कार्यालय - ओमशान्ति मीडिया
संपादक - ब्र.कु. गंगाधर, ब्रह्माकुमारीज़,शान्तिवन,तलहटी,
पोस्ट बॉक्स न-5,आबू रोड, राज. 307510
सम्पर्क- M- 9414006096, 9414154344, 9414182088
Email-omshantimedia@bkivv.org
सदस्यता शुल्क : भारत - वार्षिक - 240 रूपये, तीन वर्ष - 720 रूपये, आजीवन - 6000 रूपये
Website: www.omshantimedia.org